नहीं। विद्वान् वैज्ञानिक और पण्डितजन इस जगत् के अथवा अन्य लोकों के अणुकणों की गणना तो कर भी लें, पर आपकी शक्तियों की गणना नहीं हो सकती, यद्यपि आप सबके सामने विद्यमान हैं।' भगवान् श्रीकृष्ण अजन्मा ही नहीं हैं, अविनाशी (अव्यय) भी हैं। उनका श्रीविग्रह सच्चिदानन्दघन है और सम्पूर्ण शक्तियाँ अनन्त हैं।

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन।।२६।।

वेद=जानता हूँ; **अहम्**=मैं; **सम**=समान रूप से; **अतीतानि**=पूर्वकाल के; **वर्तमानानि**=वर्तमान के; **च**=तथा; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **भविष्याणि**=भविष्य के; **च**=भी; **भूतानि**=जीवों को; **माम्**=मुझको; **तु**=परन्तु; **वेद**=जानता: **न**=नहीं; **कश्चन**=कोई।

अनुवाद

हे अर्जुन! मैं स्वयं भगवान् पूर्वकाल के, वर्तमान के और भविष्य के सम्पूर्ण घटना-चक्र को जानता हूँ। मैं सब जीवों को जानता हूँ, परन्तु मुझे कोई नहीं जानता।।२६।।

तात्पर्य

इस श्लोक में साकारता-निराकारता के विवाद की स्पष्ट विवेचना है। यदि निर्विशेषवादियों की धारणा के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण माया अर्थात् प्राकृत होते, तो जीव के समान उनका भी देहान्तर होता, जिससे उन्हें भी पिछले जीवन की पूर्ण रूप से विस्मृति हो जाती। कोई भी प्राकृत देहधारी न तो अपने पूर्व जीवन की स्मृति बनाए रख सकता और न ही अपने भावी अथवा वर्तमान जीवन के परिणाम की भविष्यवाणी कर सकता है। भाव यह है कि वह भूत, वर्तमान एवं भविष्य के घटनाक्रम को नहीं जानता; सांसारिक विकारों से मुक्त हुए बिना कोई भी त्रिकालज्ञ नहीं हो सकता।

साधारण मनुष्यों से विलक्षण, भगवान् श्रीकृष्ण की स्पष्ट घोषणा है कि वे पूर्ण रूप से जानते हैं कि पूर्व में क्या हुआ, वर्तमान में क्या हो रहा है और भविष्य में क्या होगा। चौथे अध्याय में हम देख चुके हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण को करोड़ों वर्ष पूर्व सूर्यदेव विवस्वान् को दिए उपदेश की पूर्ण स्मृति है। श्रीकृष्ण सम्पूर्ण जीवों के हृदय में परमात्मा के रूप में हैं, इसलिए जीवमात्र से परिचित हैं। वे जीवमात्र में परमात्मा रूप से तथा इस जगत् के परे वैकुण्ठ-जगत् में भगवत्स्वरूप में स्थित हैं; परन्तु अल्पज्ञ उनको परम पुरुषोत्तम के रूप में नहीं जान सकते। श्रीकृष्ण का दिव्य श्रीविग्रह निःसन्देह अविनाशी है। वे सूर्य-तुल्य हैं और माया ठीक मेघ के समान है। प्राकृत आकाश में सूर्य, नक्षत्र और अनेक लोक हैं। मेघ इन सबको अस्थायी रूप से ढक सकते हैं, परन्तु ऐसा हमें अपनी सीमित